

शिक्षा संवाद

2022, 9 (1-2): 62-72

ISSN: 2348-5558

©2022, संपादक, शिक्षा संवाद, नई दिल्ली

आलेख

राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 : समग्र और बहु-विषयक शिक्षा

शिखा वाजपई

इंस्टीट्यूट ऑफ होम इकनोमिक्स

दिल्ली विश्वविद्यालय

ईमेल: shikhavajpai@gmail.com

सार

समग्र शिक्षा शारीरिक, भावनात्मक और संज्ञानात्मक क्षमताओं के विकास को संदर्भित करती है। यह व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास को संदर्भित करता है। यह अधिक दार्शनिक विचार है। सामान्य तौर पर, इसका अर्थ है कि अच्छे जीवन की अवधारणा क्या होनी चाहिए। आंतरिक दृष्टि से शिक्षा मूल्यवान है। हालांकि, अच्छे जीवन का एहसास करने के लिए इसका एक महत्वपूर्ण मूल्य भी है। एक लोकतांत्रिक देश में, समग्र शिक्षा नागरिकता मूल्यों को संदर्भित करती है। यह एक महत्वपूर्ण मूल्य के रूप में सहिष्णुता, धर्मनिरपेक्ष मूल्यों और समावेश को संदर्भित करता है। सभी प्रकार की शिक्षा का उद्देश्य, चाहे वह अनुशासनात्मक हो या बहु अनुशासनात्मक, समग्र शिक्षा है अतः समग्रता का अर्थ बहुविषयक नहीं है।

कूटशब्द: समग्र, बहुविषयक, शिक्षा, एनईपी-2020, पाठ्यक्रमा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की एक महत्वाकांक्षी सिफारिश है- 'समग्र और बहु-विषयक शिक्षा। इस लेख का मूल उद्देश्य एक प्रारम्भिक एवं परिचय के स्तर पर बहु-विषयक शिक्षा पर चर्चा करना है। साथ ही इस पर्वे का उद्देश्य यह भी है कि उच्च शिक्षा संस्थानों में शिक्षकों के सम्मुख बहु-विषयक शिक्षण के विचार के साथ-साथ शोध एवं ज्ञान निर्माण के लिए एक दृष्टिकोण रखा जा सके। दरअसल राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 का मानना है कि समग्र और बहु-विषयक शिक्षा भविष्य की आवश्यकताओं के ध्यान में रखती है। समग्र और

बहु-विषयक शिक्षा, स्पष्टतः काफी सरल और साधारण दिखाई देती है लेकिन विश्व में जहां भी यह प्रचलन में है उससे प्राप्त अंतर्दृष्टि बताती है कि यह एक जटिल विचार है जिस पर गंभीरता से विचार किया जा सकता है। दरअसल इस विषय पर दो स्तरों पर विचार किया जा सकता है, इनमें से एक -अवधारणा है और दूसरा है- प्रक्रिया। इस लेख में समग्र और बहु-विषयक शिक्षा को दोनों ही स्तरों पर समझने का प्रयास किया गया है।

समग्र, बहुविषयक शिक्षा क्या है ?

राष्ट्रीय शिक्षा नीति का आधार स्तम्भ भारतीय ज्ञान परंपरा है और शिक्षा नीति की सम्पूर्ण सिफारिशों में यह देखने को मिलता भी है। यह नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति अधिक समग्र और बहुविषयक शिक्षा का प्रस्ताव करती है। जैसा की पहले भी बताया गया है। यह भारत की प्राचीन शिक्षा परंपरा को साथ में लेकर चलती है जो समाज-विज्ञान, भौतिक-विज्ञान, मानविकी-अनुशासन, व्यावसायिक और पेशेवर शिक्षा से ज्ञान के सभी क्षेत्रों की व्यापक समझ प्रदान करती है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का दावा है कि ज्ञान की सभी शाखाओं को 'कला' माना जाता है, जिसे आधुनिक शिक्षा 'उदार कला' के रूप में दर्शाती है। उपरोक्त अर्थों में समग्र और बहु-विषयक शिक्षा की ओर लौटने का आह्वान किया गया है। एक समग्र और बहु-विषयक शिक्षा का औचित्य रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच, समस्या सुलझाने की क्षमता और मनुष्य की विकासशील क्षमताओं-बौद्धिक, सौंदर्य, सामाजिक, शारीरिक, भावनात्मक और नैतिक को बढ़ाने के संदर्भ में दिया गया है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति की बिन्दु संख्या 11 में समग्र शिक्षा, बहु- विषयक शिक्षा और उदार शिक्षा को समानार्थक रूप से संदर्भित किया गया है। समग्र बहुआयामी है, और बहुआयामी समग्र है, और इसके अलावा समग्र और बहुआयामी उदार शिक्षा है। इसके अलावा, इतिहास में दो अलग-अलग समय, प्राचीन और आधुनिक (21 वीं सदी) की तुलना ज्ञान के विकास में दो काल खंडों के गुणात्मक अंतर के भेद किए बिना की जाती है। इससे कुछ प्रश्न उठते हैं :

- ज्ञान किसे कहा जाए ?
- ज्ञान किस तरह से कला है ?
- सभी कलाओं का ज्ञान किस प्रकार समग्र शिक्षा की ओर ले जाता है ?
- प्राचीन शिक्षा की ओर लौटने का क्या अर्थ है।

- क्या नीति विशेष ज्ञान के अनुशासनात्मक आधार को समाप्त करने की वकालत करती है जिसे अभी भी दुनिया भर के विश्वविद्यालयों में पसंद किया जाता है।
- क्या नीति न्यून सिद्धांत अभिन्यास या अधिक व्यावहारिक अभिविन्यास या दोनों के मिश्रण की ओर बढ़ने की वकालत करती है ?

विभिन्न शब्दों की व्याख्या अकादमिक मंचों में भिन्न-भिन्न होती है और उन पर समग्र, बहु-विषयक और उदार और उनके बीच अंतर्संबंधों की स्पष्ट समझ रखने के लिए वाद-विवाद करने की आवश्यकता होती है। स्पष्टता के लिए, अकादमिक समुदाय में मतभेदों के बावजूद, यहाँ तीन शब्दों- समग्र, उदार और बहु-विषयक शिक्षा के बारे में जानने का प्रयास किया गया है, जो बदले में, शब्दों के अर्थ पर आगे चर्चा कर सकते हैं।

समग्र शिक्षा क्या है ?

समग्र शिक्षा शारीरिक, भावनात्मक और संज्ञानात्मक क्षमताओं के विकास को संदर्भित करती है। यह व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास को संदर्भित करता है। यह अधिक दार्शनिक विचार है। सामान्य तौर पर , इसका अर्थ है कि अच्छे जीवन की अवधारणा क्या होनी चाहिए। आंतरिक दृष्टि से शिक्षा मूल्यवान है। हालांकि , अच्छे जीवन का एहसास करने के लिए इसका एक महत्वपूर्ण मूल्य भी है। एक लोकतांत्रिक देश में, समग्र शिक्षा नागरिकता मूल्यों को संदर्भित करती है। यह एक महत्वपूर्ण मूल्य के रूप में सहिष्णुता, धर्मनिरपेक्ष मूल्यों और समावेश को संदर्भित करता है। सभी प्रकार की शिक्षा का उद्देश्य, चाहे वह अनुशासनात्मक हो या बहु अनुशासनात्मक, समग्र शिक्षा है अतः समग्रता का अर्थ बहुविषयक नहीं है।

उदार शिक्षा क्या है ?

उदार शिक्षा ज्ञान का वैज्ञानिक प्रयास है। यह प्रश्न पूछने और दिमाग की आलोचनात्मक क्षमता विकसित करता है। ज्ञान तब आगे बढ़ता है, जब प्रगति के क्रम में मौजूदा ज्ञान पर प्रश्न उठाया जाता है और इस प्रक्रिया में, एक वैकल्पिक परिकल्पना प्रस्तुत की जाती है और उसकी जांच की जाती है। पुराने ज्ञान पर प्रश्नचिह्न लगाने से नवीन ज्ञान की

स्थापना होती है। उदार शिक्षा छात्रों को एक विशेष विषय के चुनाव के माध्यम से ज्ञान की खोज का अनुसरण करने का विकल्प प्रदान करती है। हालांकि, छात्रों को किसी विशेष विषय के चुनाव को अंतिम रूप देने से पहले उन्हें पता लगाने का अवसर दिया जा सकता है। उदाहरण के लिए, अमेरिका में एक स्नातक उदार शिक्षा एक विशेष अनुशासन के चयन से पहले शुरुआती सेमेस्टर में पसंद के किसी भी विषय को चुनने की अनुमति देती है। भारतीय उच्च शिक्षा में उनकी तरह कोर और ऐच्छिक, मुख्य या लघु का विकल्प है। उदार शिक्षा किस प्रकार समग्र शिक्षा प्राप्त करने में सहायता करती है? मेरे मत में, यह तर्क की शक्ति पैदा करके ही एक व्यक्ति यह तय कर सकता है कि अच्छा जीवन क्या है जिसे वह महत्व देता है। इसका अर्थ है कि उदार शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति के लिए विशेष रूप से समग्र शिक्षा प्राप्त कर सकती है। समग्रता का कोई पैमाना नहीं हो सकता जो ऊपर से प्रदान किया जा सके। यदि उदार शिक्षा की कसौटी तर्क है, तो यह शिक्षा के दोनों रूपों में हो सकती है-अनुशासनात्मक और बहुविषयक।

बहु-विषयक क्या है?

शिक्षा विभिन्न विषयों का संयोजन बहु-विषयक शिक्षा है। इस शब्द का प्रयोग सामान्य अर्थों में यह इंगित करने के लिए किया जाता है कि विभिन्न विषयों से ज्ञान धाराएं कभी-कभी सामाजिक, आर्थिक और प्राकृतिक घटना को समझने के लिए बेहतर अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकती हैं। विभिन्न विषयों की अंतःक्रिया विभिन्न तरीकों से हो सकती सरल और समग्र एवं बहु-विषयक शिक्षा और एकाधिक प्रवेश निकास जटिल। ज्ञान निर्माण के परिवर्तनशील तरीकों को समझने के लिए इस तरह की अंतःक्रिया की समझ आवश्यक है। 20 वीं शताब्दी में, आधारभूत विषयों जैसे, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, गणित, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान, भूगोल, मनोविज्ञान, भाषा और दर्शन तक सीमित थे। बाद में, ज्ञान की विभिन्न अनुप्रयुक्त शाखाओं की शुरुआत की गई, जैसे इंजीनियरिंग, कानून, चिकित्सा, आदि। धीरे-धीरे, बुनियादी विषयों को पढ़ाने में भी बहु-विषयकता शुरू की गई थी। उदाहरण के लिए, एक स्नातक को अर्थशास्त्र के शिक्षण के लिए गणित और सांख्यिकी के शिक्षण की भी आवश्यकता होती है। गणित और सांख्यिकी के साथ अर्थशास्त्र के संयोजन के साथ, अर्थशास्त्र अधिक विकसित हुआ क्योंकि इसने अर्थशास्त्र को अनुभवजन्य विज्ञान के रूप में विकसित होने दिया और अधिक सटीकता के

साथ अनुमान और पूर्वानुमान में मॉडल बनाने की अनुमति दी। अर्थशास्त्र को विकसित करने में गणित और सांख्यिकी का महत्वपूर्ण सहयोग रहा है।

इस सरल रूप में, 20वीं शताब्दी में बहु-विषयकता बढ़ी और दुनिया भर के विभिन्न विश्वविद्यालयों में एक विषय के भीतर भी पाठ्यक्रम की परिकल्पना की गई। सामान्य तौर में, 20 वीं शताब्दी में बहु- विषयकता बढ़ी और एक विषय के भीतर भी पाठ्यक्रमों को दुनिया भर के विभिन्न विश्वविद्यालयों में परिकल्पित किया गया है। कई उदाहरणों में, एक नए विषय का विकास बहु-विषयक शिक्षा का परिणाम था। उदाहरण के लिए, प्रबंधन एक विषय के रूप में अर्थशास्त्र, वित्त, वाणिज्य, लेखा, मनोविज्ञान, गणित के साथ प्रबंधन के संयोजन के साथ विकसित हुआ। पर्यावरण विज्ञान पर स्नातक कार्यक्रम के एक पाठ्यक्रम में बहु विषयकता स्पष्ट दिखती है, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, पारिस्थितिकी विज्ञान, जैव-प्रौद्योगिकी, जैव-भूगोल, अर्थशास्त्र का एक संयोजन है। इन उदाहरणों में, हम पाते हैं कि नए बहु-विषयक विषयों का विकास, विषयों के साथ-साथ बहु-विषयक विषयों की परस्पर क्रिया का परिणाम है। इसलिए, बहु-विषयक शिक्षा, जिसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में संदर्भित किया गया है, एक ऐसी प्रथा रही है जो बढ़ती विशेषज्ञता के साथ विश्वविद्यालयों में पाठ्यक्रम में विभिन्न तरीकों से विकसित हुई और समस्याओं को हल करने के लिए ज्ञान लागू करने के प्रयास में विकसित हुई।

संक्षेप में, हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 में उल्लिखित समग्र, उदार और बहु - विषयक शिक्षा के बीच एक विश्लेषणात्मक अंतर करने की आवश्यकता है। समग्र शिक्षा एक आदर्श विचार है। समग्र का अर्थ है लोगों को सशक्त बनाना। इसे जीवन को चुनने की स्वतंत्रता प्रदान करनी चाहिए क्योंकि एक व्यक्ति नेतृत्व करना पसंद करता है, दबाव से मुक्त। समग्रता का अर्थ नागरिकता के मूल्य, सम्मान और सभी व्यक्तियों के साथ समान व्यवहार करना भी है। सभी शिक्षा का उद्देश्य-अनुशासनात्मक और बहु - विषयक शिक्षा-एक समग्र जीवन जीना है। उदार शिक्षा वैज्ञानिक खोज पर आधारित है। वैज्ञानिक प्रगति प्रश्न पूछने, वैकल्पिक परिकल्पना प्रस्तुत करने और परीक्षण से होती है। उदार शिक्षा अढोचनात्मक मस्तिष्क और तर्क करने की क्षमता विकसित करने में मदद करती है। उदार शिक्षा 20 वीं शताब्दी की पहली तिमाही तक ज्ञान के विषय के आधार पर शुरू हुई और बाद में विषय और बहु-विषयक शिक्षा हुई। उदार शिक्षा के बावजूद तर्क शक्ति की ओर अग्रसर होने के

बावजूद, उदार शिक्षा का समग्र शिक्षा के साथ विवादित हो सकता है, क्योंकि यह मानविकी के पृथक हो सकती है।

सामान्य रूप में, उदार शिक्षा को प्रचलित विश्वास पर सवाल उठाना चाहिए और तर्कसंगत जांच से समाज में न्याय होना चाहिए। बहु-विषयक शिक्षा विषयों के संयोजन के साथ होती है। उन समस्याओं का समाधान खोजने का प्रयास, जिन्हें विशिष्ट विषयों की सीमा के भीतर पूरी तरह से समझा नहीं जा सकता है, 20 वीं शताब्दी में विभिन्न रूपों में पहले से ही बहु विषयक शिक्षा का नेतृत्व किया। निस्संदेह, बहुविषयक शिक्षा ज्ञान के नए क्षितिज खोलती है। हालांकि, इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि ज्ञान के नए क्षितिज समग्र शिक्षा के लिए भी होंगे जो मानविकी के अनुसार हो। समग्र, उदार और बहु-विषयक के बीच अंतर करने के बाद, जिसे कभी-कभी समान माना जाता है, इसलिए बहु-विषयक शिक्षा को अच्छी तरह से समझना महत्वपूर्ण है जो अंतःविषयक और परा-विषयक शिक्षा के साथ और अधिक भ्रमित है। अन्य शब्द जैसे, अंतःविषय और परा-विषयक है। हालांकि, हम बहु-विषयक, अंतःविषयक और पर-विषयक शिक्षा के बीच के अंतर पर ध्यान केंद्रित करेंगे।

बहु-विषयक, अंतःविषयक और परा-विषयक शिक्षा

बहु-विषयक बहु-विषयक शिक्षा विभिन्न विषयों से ज्ञान के किसी भी एकीकरण या संश्लेषण के बिना विषयों का संयोजन है। दो या तीन विषय संबंधित विषयों के विचारों और विधियों के साथ आते हैं जो विचाराधीन समस्या को समझने के लिए उपयोगी हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, अर्थशास्त्र और सांख्यिकी उपयोगी हैं क्योंकि वे अनुभवजन्य परीक्षण आर्थिक सिद्धांत को लागू करने में मदद करते हैं, जिसके लिए सांख्यिकीय उपकरण उपयोगी होते हैं कोई नया ज्ञान विकसित नहीं हुआ। एक अन्य उदाहरण में, प्रबंधन के विद्यार्थियों को अर्थशास्त्र के साथ-साथ सांख्यिकी भी पढ़ाया जाता है। एक फर्म के प्रबंधन में अर्थशास्त्र से अधिकतम लाभ प्राप्त का सिद्धांत से संबंधित है और सांख्यिकी बाजार सर्वेक्षण अनुसंधान में मदद करता है। इस उदाहरण में, अर्थशास्त्र और सांख्यिकी प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रबंधन का पाठ्यक्रम बहु-विषयक शिक्षा का एक उदाहरण है। प्रबंधन विभाग में अर्थशास्त्र और सांख्यिकी के विषय विशेषज्ञों को नियुक्त किया जा सकता है या विभाग से बाहर

पढ़ाने जा सकते हैं। विभिन्न विभागों के विषय विशेषज्ञों द्वारा अनेक उदाहरण प्रस्तुत किए जा सकते हैं। सामान्य रूप में बहु-विषयक शिक्षा विभिन्न विभागों में अस्तित्व में अस्तित्व में है।

अंतः विषयक –

अंतःविषयक शिक्षा के अर्थ के साथ-साथ उसकी प्रक्रिया भी जटिल है , और इसे गहन समझ की आवश्यकता है । क्लेन (1990) का अंतःविषयक शिक्षा पर एक दिलचस्प अध्ययन है। अंतःविषय भी विषयों का संयोजन है। हालाँकि, संबंधित विषयों से ज्ञान का एकीकरण या संश्लेषण नए ज्ञान को उत्पन्न करने के लिए होता है जो किसी समाज की समस्या को हल करने में मदद कर सकता है वह समस्या जिसे ज्ञान के विषयात्मक या बहु-विषयक आधार से हल नहीं किया जा सकता है। कुछ उदाहरण अंतःविषयक शिक्षा की अवधारणा को स्पष्ट करते हैं, विकास अध्ययन को कई विश्वविद्यालयों में पढ़ाए जाने वाले अध्ययन के क्षेत्र के रूप में ले तो, विकास अध्ययन अंतःविषयक है, विधि, मानव विज्ञान, समाजशास्त्र, लैंगिक, अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान और अंतर्राष्ट्रीय संबंध, मानव भूगोल, महत्वपूर्ण ऐतिहासिक अध्ययन, पर्यावरण मानविकी, स्वदेशी अध्ययन, औपनिवेशिक और उत्तर औपनिवेशिक अध्ययन, तकनीकी और प्राकृतिक विज्ञान का संयोजन है, इन विषयों में संयोजन विकास अध्ययन की पद्धतिगत और सैद्धांतिक कठोरता को बढ़ाती है। एक अन्य उदाहरण महिला अध्ययन है, इसमें समाजशास्त्र, नृविज्ञान, अर्थशास्त्र, इतिहास और दर्शनशास्त्र जैसे विभिन्न विषय महिलाओं के जीवन को समझने में आवश्यक है। संयोजन के साथ-साथ विभिन्न विषयों के ज्ञान का एकीकरण महिलाओं की समस्या को प्रभावी ढंग से संबोधित कर सकता है। नीति अध्ययन अंतःविषयक क्षेत्र है जो अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, लोक प्रशासन, समाजशास्त्र और दर्शनशास्त्र जैसे विषयों से ज्ञान को एकीकृत करता है। अंतःविषयक शिक्षा सभी क्षेत्रों में गहन विश्लेषण का विषय है कि विभिन्न विषयों से ज्ञान समय के साथ कैसे विकसित होता है और अंतःविषयक क्षेत्र को समझने के लिए ज्ञान का संश्लेषण कैसे विकसित होता है। वह प्रक्रिया जिसके माध्यम से अंतःविषयक ज्ञान प्राप्त होता है, एक विषय वस्तु है जिसे विषय शिक्षक स्वयं खोज सकते हैं।

परा-विषयक परा –

विषयक शिक्षा चरम अंतःविषयक है जहां ज्ञान का संश्लेषण व्यक्तिगत विषयों को अधीनस्थ करता है। उदाहरण के लिए, उत्तर आधुनिकतावाद इतिहास, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र और दर्शनशास्त्र से विचार लेता है, और इसका उपयोग कई सामाजिक घटनाओं की पहचान, आवाज, नियंत्रण, पदानुक्रम, शक्ति की व्याख्या करने के लिए किया जाता है जहां विषयक पहचान का संबंध होता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में भारतीय विश्वविद्यालयों में एक अंतःविषय शिक्षा का ढांचा विकसित करने लिए विशेष जोर दिया है। इसलिए, पाठ्यक्रम पुनर्रचना के माध्यम से अंतर्विषयकता को लागू करने के तरीकों को समझना उचित होगा। सबसे उपयुक्त रूप से राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में भारतीय विश्वविद्यालयों में एक अंतःविषय शिक्षा संरचना विकसित करने का एक मजबूत संदेश है। इसलिए, पाठ्यचर्या पुनर्रचना के माध्यम से अंतः विषयकता को लागू करने के तरीकों को समझना उचित होगा।

अंतःविषयक शिक्षा का अभ्यास

जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, बहु-विषयक शिक्षा कई विषयों का संयोजन है और जब अंतःविषयक जुड़ता है तो संयोजन ज्ञान के संश्लेषण में जुड़ जाता है, और एक नए ज्ञान विकसित होता है जिसे किसी विशेष विषय के रूप में नहीं देखा जा सकता है। मूल रूप में, दो या दो से अधिक विषयों से ज्ञान का संश्लेषण हमें समस्या और समाधान के लिए एक नई दिशा देता है। विषय एक जटिल समस्या के संबंध में कृत्रिम सीमाएँ हैं जो स्वाभाविक रूप से परस्पर अंतःनिर्भर हैं। ग्रामीण क्षेत्र में गरीब लड़कियों का स्कूल बीच में छोड़ना एक जटिल समस्या है जिसके लिए अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, भूगोल, मनोविज्ञान के साथ-साथ महिला अध्ययन और सामाजिक कार्य के दृष्टिकोण से देखने की आवश्यकता है। इसलिए, प्रश्न यह है की विश्वविद्यालय इस तरह की जटिल समस्या को समझने के लिए स्वयं को कैसे तैयार कर सकते हैं? निम्नलिखित में से कुछ दृष्टिकोण उपयोगी हो सकते हैं

एक शोध-परियोजना का चयन : अनुसंधान परियोजना के चयन में किसी महत्वपूर्ण समस्या के निकटता को ध्यान में रखा जाना चाहिए जो भिन्न-भिन्न विषयों को कम करता है। ग्लोबल

वार्मिंग की समस्याएं, प्रदूषण, जातीय संघर्ष, क्षेत्रीय अनुसंधान, तंत्रिका विज्ञान, प्राकृतिक आपदा, प्रवासन आदि अंतःविषय दृष्टिकोण के क्षेत्र हैं।

सहयोग की रचना : प्रमुख विभाग जो किसी जटिल समस्या के निकटता को ध्यान में रखते हुए एक शोध परियोजना की योजना बना रहा है , उसे टीम के सदस्यों की पहचान करनी चाहिए और समस्या पर चर्चा करने और शोध प्रस्ताव विकसित करने में उनके साथ सहयोग करना चाहिए। अनुसंधान समूह को प्रस्ताव की संकल्पना की गहनता का ध्यान चाहिए, वित्त पोषण एजेंसी के सामने मजबूती से प्रस्तुत करना चाहिए और अंत में अनुसंधान की समयावधि में एक टीम के रूप में काम करना चाहिए।

संयुक्त अनुसंधान: संयुक्त अनुसंधान विचारों के घनिष्ठ संपर्क की एक प्रक्रिया होनी चाहिए, जिसके दौरान प्रत्येक सदस्य विभिन्न विषयों के समूह के सदस्यों पर लागू होने वाले विचार और पद्धति का अनुभव रखता है। संयुक्त अनुसंधान सभी समूह सदस्यों के लिए एक पूरी तरह से नया परिप्रेक्ष्य और सहभागी संस्कृति विकसित करता है जो एक विषय की सीमा से परे है।

संयुक्त शिक्षण : संयुक्त अनुसंधान अनुभव को विश्वविद्यालय के शिक्षण कार्यक्रम का भाग बनाया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम का पुनर्गठन किया जाना चाहिए जिसमें जटिल समस्या प्रस्तुत की जा सके और किसी पाठ्यक्रम का संयुक्त शिक्षण शुरू किया जा सके। संयुक्त शिक्षण विभिन्न विषयों के शिक्षकों के बीच नए अंतःविषयक परिप्रेक्ष्य से एक समस्या को समझने पर वापस प्रतिबिंबित करने का अवसर प्रदान कर सकता है।

शिक्षण की संयुक्त समीक्षा : एक पाठ्यक्रम के अंत में, शिक्षकों और छात्रों के साथ संयुक्त समीक्षा अंतः विषयक क्षेत्रों में अनुसंधान और शिक्षण का विस्तार करने का एक उत्कृष्ट अवसर है।

संयुक्त प्रकाशन : अनुसंधान और शिक्षण का संयुक्त अनुभव शिक्षकों के एक समूह को शोध-पत्र प्रकाशित करने का पर्याप्त अवसर प्रदान करता है। समूह अनुसंधान और अध्यापन के कई पुनरावृत्तियों के बाद संकाय सदस्यों द्वारा अंतःविषयक को तेज किया जा सकता है। कहने की जरूरत नहीं है, उपरोक्त योजनाबद्ध प्रारूप न तो अद्वितीय है और न ही पालन करने के लिए

आवश्यक है। इसे अपनाने के विभिन्न तरीके हो सकते हैं, वास्तव में, संयुक्त शिक्षण पहले प्रारंभ होता है, और उसके संयुक्त अनुसंधान और प्रकाशन कर सकते हैं। संयुक्त प्रकाशन से भी अंतःविषयक की शुरुआत की जा सकती है। उच्च शिक्षा में सहयोग की संस्कृति अंतःविषय शिक्षा के नए वातावरण की पूर्व-आवश्यकता है। यह ध्यान रखना भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि अंतःविषयक ढांचे का विकास कोई अल्पकालिक घटना नहीं है, विश्वविद्यालयों में अंतःविषयक शिक्षा को एकीकृत करने में वर्षों लग सकते हैं। उच्च शिक्षा की कई चुनौतियाँ हैं जैसे, शिक्षकों की कमी, अनुसंधान वित्तपोषण, आधारभूत संरचना, इत्यादि। इसलिए, अंतःविषयक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए पाठ्यक्रम के पुनर्गठन के लिए विभिन्न मामलों में विश्वविद्यालयों के सहयोग की आवश्यकता होती है, मुख्यतः उच्च स्तर की स्वायत्तता, नौकरशाही की परेशानी कमी और वित्तीय सहायता जिसके बिना अंतःविषयक शिक्षा केवल एक सपना बनकर रह जाएगी।

निष्कर्ष- इस पर्व में मैंने समग्र उदार और बहु-विषयक शिक्षा के बीच अंतर पर चर्चा की। समग्र शिक्षा एक आदर्श विचार है। यह शिक्षा के साथ छात्र की उच्च क्षमताओं से भी संबंधित है जो एक जीवन जीने के उच्च अवसर के चयन की अनुमति देता है। उदार शिक्षा का उद्देश्य मन की तर्क क्षमता का विकास करना है। बहु-विषयक शिक्षा विषयों का संयोजन है और अंतःविषयता समाज की समस्याओं को हल करने के लिए विषयों के संयोजन से उभरने वाले ज्ञान के संश्लेषण की अनुमति देती है। उच्च शिक्षा के शिक्षकों को संयुक्त अनुसंधान, शिक्षण और प्रकाशन के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ताकि अंतर अनुशासनात्मकता को बढ़ावा दिया जा सके।

संदर्भ

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020). (2020). समग्र और बहु-विषयक शिक्षा के संदर्भ में शिक्षा का उद्देश्य: भारतीय संदर्भ में शिक्षा के सर्वांगीण विकास पर जोर। भारत सरकार।
- शर्मा, आर. (2021). समग्र शिक्षा और बहु-विषयक दृष्टिकोण: NEP 2020 में शैक्षिक परिवर्तन। *शिक्षा विकास पत्रिका*, 15(3), 45-60.

- गुप्ता, पी. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और शिक्षा के बहुविध दृष्टिकोण। *हिन्दी शिक्षा समीक्षा*, 12(1), 32-41.
- कुमार, एस. (2020). NEP 2020 और बहु-विषयक शिक्षा की आवश्यकता। *शिक्षा और समाज*, 18(2), 78-85.
- भारत सरकार (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: समग्र और बहु-विषयक शिक्षा की दिशा। *नई शिक्षा दृष्टि रिपोर्ट*. नीति आयोग।
- सिंह, डी. (2021). समग्र उदार शिक्षा: NEP 2020 के तहत सुधार। *शैक्षिक सुधार पत्रिका*, 22(4), 102-110.
- शुक्ला, र. (2021). समग्र शिक्षा और सामाजिक विकास: NEP 2020 में एक नई दिशा। *शिक्षा विज्ञान और विकास*, 5(6), 134-140.
- भारत सरकार (2020). NEP 2020 में बहु-विषयक शिक्षा का महत्व: एक समग्र दृष्टिकोण। *शिक्षा नीति विभाग रिपोर्ट*. मानव संसाधन विकास मंत्रालय।
- पांडे, क. (2020). समग्र शिक्षा और सामाजिक बदलाव: NEP 2020 के साथ नई पहल। *शिक्षा और संस्कृतियों की समीक्षा*, 9(2), 23-30.
- शर्मा, ह. (2020). समग्र और बहु-विषयक शिक्षा: NEP 2020 के दृष्टिकोण से बच्चों की शिक्षा पर प्रभाव। *भारत की शिक्षा नीति*, 14(1), 50-58.